जारवा

श्री पी. के. मिश्रा,
अलबनिका, पोर्ट ब्लेयर

अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह भारत के बंगाल खाड़ी में स्थित ऐसे टापूओं का समूह हैं जो प्राकृतिक परिदृश्यों से ओत-प्रोत, बरसाती वनों से आच्छादित और आदि कालीन की आदिम जन-जातियों का निवास स्थान भी हैं । ये आदिम जन-जातियाँ इन द्वीपों पर सदियों से रहती चली आ रही हैं और इनमें से कुछ जातियों पर आधुनिकता की छाप तक दिखाई नहीं देती हैं । आज भी वे पाषाण युग के आदि मानव की भांति रहते हैं एवं उनकी संस्कृति और कला भी आधुनिकता से अक्षुण्ण हैं ।

अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में आदिम जन-जातियों की छह प्रजातियाँ रहती हैं नामतः जारवा, ग्रेट अंडमानी, ओंगी, सेंटीनल, निकोबारी और शोम्पेन । इन में से जारवा, ग्रेट अंडमानी, ओंगी और सेंटीनल अफ्रीकी मूल के माने जाते है तथा निकोबारी और शोम्पेन बर्मा मूल के निवासी माने जाते हैं । इन जातियों के अंडमान में प्रादुर्भाव का कोई निश्चित प्रमाण तो नहीं मिलता है किन्तु इनके विषय में बहुत सारी अवधारणाएं हैं । प्राचीन काल के ग्रंथ में इन द्वीप समूह में निर्वस्त्र मानवभक्षी मनुष्यों का उल्लेख मिलता है । एक अन्य मान्यता है कि हब्शियों से लदा जहाज इन द्वीपों के समीप समुद्र के गर्भ में समा गया । उनमें से कुछ तैरकर तट तक पहुँचने में सफल रहे और वे इन्ही द्वीप समूहों में बस गए । ऐसा भी माना जाता है कि जब भारत और बर्मा अफ्रीका से अलग होकर उत्तरी दिशा मे बढ़ने लगे, तब उस भू-भाग के साथ कुछ हब्शी मानव भी अफ्रीका से अलग हो गए और कालान्तर में इन द्वीप समूह में बस गए । यह भी माना जाता है कि वे बर्मा के रास्ते से छोटी-छोटी नौकाओं में अंडमान आए थे । जारवा, ग्रेट अंडमानी, ओंगी और सेंटीनल दक्षिण और मध्य अंडमान में बस गए जबकि शोंपेन और निकोबारी निकोबार द्वीप समूह में बस गए । इस अध्याय में आगे हम केवल जारवा के बारे में चर्चा करेगें ।

बहुत पहले तो इनका नाम अंग था, किन्तु पोर्ट ब्लेयर में रहने वाले इन्हें "जारवा" कहते थे और इस प्रकार से यह प्रजाति जारवा के नाम से जाने जानी लगी है ।

आवास और जनसंख्या :-

जारवा दक्षिण अंडमान के तिरूर से लेकर मध्य अंडमान के कौशल्या नगर तक विस्तृत आरक्षित वन क्षेत्र में निवास करते हैं और कुछ स्पाइक आईलैंड तक के पश्चिम तट पर बसे हुए हैं । अंडमान ट्रंक रोड के आस-पास के जंगलों में इनकी उपस्थिति पाई जाती है ।

मनव विज्ञानियों के अनुसार सन् 1850 में जरावा की तादात लगभग 1000-1200 थी । बाद में सन् 1921 में एक निराधार रिपोर्ट के अनुसार उनकी जनसंख्या घटकर 70 तक पहुंच गई थी । उनकी जनसंख्या में कमी का कारण आपसी लड़ाइयाँ, जापानी आक्रमण के समय जापानियों का उनके प्रति बर्बरतापूर्ण अत्याचार, दुर्घटना और मलेरिया व चेचक जैसी बीमारियों के कारण अकाल मृत्यु आदि थे । अंडमान तथा निकोबार प्रशासन के आदिम जनजाति विभाग की गणना के अनुसार सन् 1999 इनकी जनसंख्या लगभग 200 थी और 2010 तक आते-आते इनकी संख्या बढ़कर 360 तक पहुंच गई । जारवा की जनसंख्या में वृद्धि एक सुखद भविष्य का संकेत है और अभी उनकी जनसंख्या 530 है ।

इनके आवासों को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :- अर्ध स्थायी, अस्थाई और कुछ महीनों के लिए रहने योग्य बस्तियाँ ।

अर्ध स्थायी बस्तियों में एक बड़ी पर्ण कुटी का उपयोग सामुदायिक कक्ष के रूप में किया जाता है । इस झोपड़े में वे अल्मुनियम की डेकची, लकड़ी की बाल्टियाँ, बांस में करीने से बांधे गए सुअरों की खोपड़ियाँ और अन्य सामग्रियाँ रखते हैं । ताकि ऐसा न लगे कि झोपड़ी का परित्याग कर दिया गया है । इनकी कुटीर में दीवार, दरवाजे और खिड़कियाँ नही होती हैं और ये चारों ओर से खुले होते हैं । इन झोपडियों में परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए स्थान नियत रहता है ।

शरिक संरचना

अफ्रीकी मूल के ग्रेट अंडमानी, ओंगी और सेंटीनल जातियों से परे जारवा भी छोटी किन्तु बलिष्ठ कद-काठी के होते हैं जिनके चमडे का रंग काला होता है तथा केश घुंघराले होते हैं, किंतु बच्चों के बाल भूरे रंग के होते है । वे अपने दांतों को घिसकर नुकीले / पैने बनाते हैं और साफ रखते हैं । कई बार तो ये अपने दांतों की मदद से नारियल की ऊपरी जटा को भी उतार देते हैं । इनके नाखून भी बहुत मज़बूत और पैने होते है तथा ये